रेगिस्तान के पार

ईशा सरदेसाई द्वारा पुनर्लिखित

मुसाफ़िरों का यह काफ़िला, परशिया के रेगिस्तान में कहीं था। उनके चारों ओर रेत का समुन्दर था; ऐसा लग रहा था जैसे उसकी लहरों को तराशकर लगभग स्थायी बना दिया गया हो। वे लहरें आगे बढ़ती ही जा रही थीं मानो सन्ध्या काल में क्षितिज तक एक-दूसरे का पीछा कर रही हों।

इस काफ़िले का मुखिया, एक व्यापारी था, रेशम और खूबसूरत कालीनों का एक विक्रेता। उसने अपने सामान को बखूबी लपेटकर, खींची जाने वाली गाड़ियों में रखा हुआ था; जो ऊँटों की पीठ से बाँधी थीं और अब वह — अपने कुछ शागिर्दों के साथ — कहीं दूर और अधिक मुनाफ़ेवाले बाज़ारों की ओर जा रहा था। दिन में वे तम्बू लगाकर सूरज की तपती धूप से खुद को बचाते। रात को वे तारों से अपनी दिशा तय करके आगे बढ़ते।

वे अब अपने सफ़र के आख़री पड़ाव पर थे। वह मार्गदर्शक जिसे उन्होंने सफ़र शुरू करने से पहले काम पर रखा था, उसने उन्हें भरोसा दिलाया कि वे लोग सुबह तक बाज़ार पहुँच जाएँगे। काफ़िले में सबसे आगे चल रहे उस आदमी ने कहा, "बस मेरे पीछे आते रहो और हम बहुत जल्द ही वहाँ पहुँच जाएँगे।"

धीरे-धीरे उनके आस-पास अन्धेरा छाने लगा, आकाश हल्के नीले-बैंगनी रंग से बदलकर गाढ़े नीले रंग का होने लगा था। उनका मार्गदर्शक आसमान की ओर टकटकी लगाकर देखने लगा। यहाँ रेगिस्तान में उसे लगा कि वह सभी तारों को देख पा रहा था। और वह देख पा रहा था, अनेक नक्षत्र और आकाश-गंगाएँ, अंतरिक्ष का एक जगमगाता भँवर जो दूर क्षितिज से निकलता हुआ प्रतीत हो रहा था।

आहा, उसने सन्तोषभरी साँस ली। *यह एक सपने जैसा है।* गाड़ी हिचकोले खाती चली जा रही थी। मन्द-मन्द हवा बह रही थी; वह चेहरे पर ठंडक महसूस कर रहा था। उसने सोचा, *शायद मैं बस थोड़ी देर के लिए अपनी आँखों को आराम दे सकता हूँ . . .*

उसने अपनी आँखें बन्द की ही थीं — या शायद उसने ऐसा सोचा था — जब अचानक किसी ने उसे हिलाकर जगाया।

“जनाब! *जनाब!* उठिए! सुबह हो गई है!”

“हूँऽऽऽ?” मार्गदर्शक ने घबराकर कहा। *“क्याआआ?”*

वह आँखें मलता हुआ उठा; धूप से उसकी आँखें चौंधिया रहीं थीं। वह अभी भी नींद की खुमारी में था और जब उसने पलटकर देखा तो व्यापारी उसके पास खड़ा था। वह मार्गदर्शक की ओर देख रहा था, उसके चेहरे पर चिन्ता की लकीरें थीं।

“जनाब,” व्यापारी ने कहा, “कहाँ है बाज़ार? और कहाँ हैं हम?”

मार्गदर्शक ने सब ओर आश्चर्य से देखा। बायीं ओर रेत थी। दाईं ओर रेत थी। सामने, पीछे, उनके चारों ओर बस *रेत ही रेत* थी।

वह व्यापारी की ओर मुड़ा, उसका मुँह खुला का खुला रह गया।

“मुझे माफ़ करना,” उसने धीरे-से कहा। “मैं . . . मैं नहीं जानता। मैं तब तक नहीं बता पाऊँगा जब तक आसमान में फिर-से तारे नहीं निकल आते।”

अब तक काफ़िले के सभी लोग चारों ओर इकट्ठा हो गए थे। मार्गदर्शक के मुँह से ये शब्द सुनकर वे सभी हक्के-बक्के रह गए।

“अब हम क्या करेंगे?” एक आदमी बोला, उसकी आवाज़ निराशा से भरी थी।

“ऐसा कैसे हो सकता है?” दूसरे आदमी ने कहा; उसकी आवाज़ में गुस्सा था।

बात बढ़ती जा रही थी, व्यापारी चुपचाप खड़ा था। वह अपने होठ चबा रहा था। हाँ, उसका दिल भी बैठ गया था। हाँ, वह भी चिन्तित, भ्रमित और क्रोधित था।

और इसका मुख्य कारण था कि वह कुछ *सोच* रहा था। पानी लगभग ख़त्म हो चुका था क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि वे आज अपनी मंज़िल पर पहुँच जाएँगे। उसे कोई हल निकालना होगा, और वह भी जल्दी।

व्यापारी ने अपने आस-पास, दूर-दूर तक फैली नारंगी-सुनहरी रेत को देखा। बीच-बीच में कुछ चट्टाने थीं। कहीं दूर उसे हरे रंग का धुँधला-सा कुछ दिखाई दिया — किसी तरह की झाड़ी।

अचानक उसे एक तरकीब सूझी।

"सुनो — सुनो सब लोग!" उसने कहा। सभी लोग चुप हो गए।

"जल्दी से सब लोग मेरे पीछे आओ!" व्यापारी ने कहा। "और गाड़ियों में रखे फावड़े ले आओ।"

व्यापारी ने उनसे जैसा कहा था उन्होंने वैसा ही किया और वे रेत पर व्यापारी के पीछे चल दिए। जल्द-ही वे उस जगह पहुँच गए जहाँ पर वह झाड़ी उग रही थी।

यह एक बड़ा-सा पौधा था, कई मीटर चौड़ा और उसके एक किनारे पर, पत्तियों के बीच से झाँक रहा था, लाल रंग का एक छोटा-सा फूल। वह गुलाब का फूल था।

"यह देखो?" उसने ऐसे कहा मानो उसे जीत हासिल हो गई हो। "अगर यह गुलाब यहाँ उग सकता है, तो इसका मतलब है कि यहाँ आस-पास कहीं पानी है। लाओ एक फावड़ा मुझे दो और एक-एक तुम लोग ले लो। हम तब तक खोदेंगे जब तक हमें पानी नहीं मिल जाता।"

तो उन्होंने खोदा — और खोदा, थोड़ा और खोदा। फिर भी अपने फावड़े से खोदते-खोदते वे ज़मीन के जितना भी नीचे जाते, वे जितनी भी रेत हटाते, उन्हें जो दिखाई देती वह थी *और* रेत।

आख़िरकार एक आदमी ने हाँफते हुए कहा, "यह काम नहीं कर रहा। हम घण्टों से खोद रहे हैं पर यहाँ पानी नहीं है।"

व्यापारी ने अपना काम रोककर ऊपर देखा। उसने अपना पसीना पोछा। उसने दृढ़तापूर्वक कहा, "अगर यहाँ पौधा है तो यहाँ पानी भी ज़रूर होगा। बस अपना काम जारी रखो। जो कर रहे हो वह करते रहो।"

उस आदमी को सन्देह तो हुआ, फिर भी वह दोबारा अपना काम करने लगा। और यह क्या, कुछ ही देर में — *टन! टन! टन!* उसका फावड़ा किसी सख़्त चीज़ से टकराया।

"ये आवाज़ कहाँ से आ रही है?" वह आदमी अचम्भित हो ज़ोर से चिल्लाया। वह रेत हटाने लगा। दूसरे लोग ऊपर से देख रहे थे, और जल्द ही उन्हें एक बड़ी-सी चट्टान दिखाई दी।

यह देखकर वह आदमी रेत पर लेट गया।

“अब हम क्या करें?” उसने हताशा भरी आवाज़ में कहा। “क्या इतनी सारी मेहनत बेकार हो गई!”

“क्या मतलब?” व्यापारी ने पूछा। “हम काम करते रहेंगे।”

“पर यह चट्टान!” उस आदमी ने सन्देह जताया।

“इसकी वजह से हम क्यों रुक जाएँ?” व्यापारी ने पूछा।

वह आदमी हैरान रह गया। “हम इस चट्टान को कैसे तोड़ेंगे?” उसने पूछा। “ये फावड़े किसी काम के नहीं हैं।”

“हमारे पास दूसरे औज़ार हैं,” व्यापारी ने कहा। “जाओ, तुम सब, गाड़ी से हथौड़े निकाल लाओ।”

तो वे सब हथौड़े लेने चले गए। वापस आने पर व्यापारी ने कहा, “अब अपनी ताक़त का इस्तमाल करो। अपनी सारी हिम्मत और इरादों की शक्ति का इस्तमाल करो। तोड़ दो यह चट्टान।”

उन आदमियों ने अपने हाथों में मज़बूती से हथौड़े पकड़े और उन्हें ऊपर उठाया। उन्होंने एक साथ चट्टान पर हथौड़ों से प्रहार किया।

धममम। आवाज़ इतनी ज़ोर की थी कि कान के पर्दे ही फट जाएँ। एक बार फिर उन्होंने हथौड़े उठाए और चट्टान पर दे मारे। *धममम।*

और जल्द ही चट्टान में दरारे पड़ गईं। और जल्द ही वहाँ पानी था, पानी की बूँदे दरारों से बह रही थीं। व्यापारी और उसका काफ़िला खुशी से ज़ोर-ज़ोर से हँसने-गाने लगा। वे बहुत क़रीब थे, मन्ज़िल दिखाई दे रही थी! वे और ज़ोर-ज़ोर से हथौड़े चलाने लगे, तभी —

हथौड़े के आख़री ज़बरदस्त आघात से, धातु के खनिज पदार्थ के साथ टकराने की ज़ोरदार आवाज़ आख़री बार आई और चट्टान टूट गई। उसके दो टुकड़े हो गए। ऊपर, ऊपर, *ऊपर* पानी का सोता फूट पड़ा, आख़िर दबी हुई ऊर्जा बाहर आ गई।

हाँ, व्यापारी ने आसमान की ओर जाते पानी के सोते को देखते हुए सोचा।

हाँ, उसने अपने ऊपर पानी की बूँदों से बने मेहराब को देखते हुए सोचा। वे धूप में स्फटिक की तरह चमक रही थीं।

हमारी प्यास ज़रूर बुझेगी, उसने सोचा। *और अब — अब — अब हम रेगिस्तान के पार जाएँगे।*

© २०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन® । सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह कहानी एक जातक कथा से प्रेरित है जो भगवान बुद्ध के विभिन्न अवतारों के बारे में लघु कहानियों व किस्सों का संकलन है।